

**पाठ—3**  
**आवारा मसीहा : दिशाहारा**  
(लेखक — विष्णु प्रभाकर)

**विधा — जीवनी**

संदेश — इस रचना के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करे, यह आवश्यक नहीं, किन्तु किसी विशेष क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन से उसके पूरे व्यक्तित्व का आकलन हो सकता है। प्रतिभा के विकास को हर समय उचित अवसर मिलें, आवश्यक नहीं लेकिन जब भी मिले उसका उपयोग करना चाहिए।

**मुख्य स्मरणीय बिन्दु —**

- 'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित महान कथाकार शरत्चन्द्र की जीवनी है। इसके लिए विष्णु प्रभाकर जी को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह पाठ 'आवारा मसीहा' के प्रथम पर्व 'दिशाहारा' का एक अंश है। इसमें लेखक ने शरत्चन्द्र के बचपन से किशोरावस्था तक के जीवन के विविध पहलुओं को इस प्रकार वर्णित किया है, जिससे बचपन की शरारतों में भी शरत् के एक अत्यन्त संवेदनशील और गम्भीर व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। उनके रचना-संसार के समस्त पात्र वस्तुतः उनके वास्तविक जीवन के ही पात्र हैं।
- शरत् के पिता यायावर प्रवृत्ति के थे। वे कभी भी एक जगह बँधकर नहीं रहे। उन्होंने कई नौकरियाँ की तथा छोड़ी। वे कहानी, नाटक, उपन्यास इत्यादि रचनाएँ लिखना तो प्रारम्भ करते किन्तु उनका शिल्पी मन किसी दासता को स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए रचनाएँ पूर्ण नहीं हो पाती थी। जब पारिवारिक भरण-पोषण असंभव हो गया तब शरत् की माता सपरिवार अपने पिता के घर आ गई।
- भागलपुर विद्यालय में 'सीता-वनवास', 'चारू-पीठ', 'सद्भाव-सद्गुरु' तथा प्रकांड व्याकरण इत्यादि पढ़ाया जाता था। प्रतिदिन पंडित जी के सामने परीक्षा देनी पड़ती थी और विफल होने पर दण्ड भोगना पड़ता था। तब लेखक को लगता था कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनुष्य को दुःख पहुँचाना ही है।
- नाना के घर में शरत् का लालन-पोषण अनुशासित रीति और नियमों के अनुसार होने लगा। घर में बाल-सुलभ शरारतों पर भी कठोर दंड दिया जाता था। फेल

होने पर पीठ पर चाबुक पड़ते थे। नाना के विचार से बच्चों को केवल पढ़ने का अधिकार है, प्यार और आदर से उनका जीवन नष्ट हो जाता है। वहाँ सृजनात्मकता के कार्य भी लुक-छिपकर करने पड़ते थे।

- शरत् को घर में निषिद्ध कार्यों को करने में विशेष आनन्द आता था। निषिद्ध कार्यों को करने में उन्हें स्वतन्त्रता का तथा जीवन में ताजगी का अनुभव होता था। शरत् को पशु-पक्षी पालना, तितली पकड़ना, उपवन लगाना, नदी या तालाब में मछलियाँ पकड़ना, नाव लेकर नदी में सैर करना और बाग में फूल चुराना अतिप्रिय था।
- शरत् और उनके पिता मोतीलाल दोनों के स्वभाव में काफी समानताएँ थी। दोनों साहित्य प्रेमी, सौन्दर्य बोधी, प्रकृति प्रेमी, संवेदनशील तथा कल्पनाशील और यायावर (घुमक्कड़) प्रवृत्ति के थे।
- कभी-2 शरत् किसी को कुछ बताए बिना गायब हो जाता। पूछे जाने पर वह बताता कि तपोवन गया था। वस्तुतः तपोवन लताओं से घिरा, गंगा नदी के तट पर एक स्थान था जहाँ शरत् सौन्दर्य उपासना करता था।
- अघोरनाथ अधिकारी के साथ गंगाघाट जाते हुए शरत् ने जब अपने अंधे पति की मृत्यु पर एक गरीब स्त्री के रुदन का करुण स्वर सुना तो शरत् ने कहा कि दुखी लोग अमीर आदमियों की तरह दिखावे के लिए जोर-जोर से नहीं रोते। उनका स्वर तो प्राणों तक को भेद जाता है। यह सचमुच का रोना है। छोटे से बालक के मुख से रुदन की ऐसी सूक्ष्म व्याख्या सुनकर अघोरनाथ के एक मित्र ने भविष्यवाणी की थी जो बालक अभी से रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है, वह भविष्य में अपना नाम ऊँचा करेगा। अघोरनाथ के मित्र की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई।
- शरत् के स्कूल में एक छोटा-सा पुस्तकालय था। शरत् ने पुस्तकालय का सारा साहित्य पढ़ डाला था। व्यक्तियों के मन के भाव जाने में शरत् का महारत हासिल थी पर नाना के घर में उसकी प्रतिभा को पहचानने वाला कोई न था। शरत् छोटे नाना की पत्नी कुसुमकामिनी को अपना गुरु मानते रहे।
- नाना के परिवार की आर्थिक हालत खराब होने पर शरत् के परिवार को देवानंदपुर लौटकर वापस आना पड़ा।
- मित्र की बहन धीरू कालांतर में 'देवदास की पारो', 'श्रीकांत की राजलक्ष्मी', 'बड़ी दीदी' की माधवी के रूप में उभरी।
- शरत् को कहानी लिखने की प्रेरणा अपने पिता की अलमारी में रखी 'हरिदास की गुप्त बातें' और 'भवानी पाठ' जैसी पुस्तकों से मिली। इसी अलमारी में उन्हें

पिता द्वारा लिखी अधूरी रचनाएँ भी मिली। जिन्होंने शरत् के लेखन का मार्ग प्रशस्त किया। शरत् ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन की कई घटनाओं एवं पात्रों को सजीव किया है।

- शरत् में कहानी गढ़कर सुनाने की जन्मजात प्रतिभा थी। वह पंद्रह वर्ष की आयु में इस कला में पारंगत होकर गाँव में विख्यात हो चुका था। गाँव के जमींदार गोपालदत्त मुंशी के पुत्र अतुलचंद्र ने उसे कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया। अतुलचंद्र शरत् को थियेटर दिखाने कलकत्ता ले जाता और शरत् से उसकी कहानी लिखने को कहता। शरत् ऐसी कहानियाँ लिखता कि अतुल चकित रह जाता। अतुल के लिए कहानियाँ लिखते-लिखते शरत् ने मौलिक कहानियाँ लिखना प्रारंभ कर दिया।
- शरत् का कुछ समय 'डेहरी आन सोन' नामक स्थान पर बीता। शरत् ने 'गृहदाह' उपन्यास में इस स्थान को अमर कर दिया। 'श्रीकांत' उपन्यास का नायक श्रीकांत स्वयं शरत् है। 'काशीनाथ' कहानी का नायक उनका गुरुपुत्र था। जो शरत् का घनिष्ठ मित्र था। लम्बी यात्रा के दौरान परिचय में आई विधवा स्त्री को लेखक ने 'चरित्रहीन' उपन्यास में जीवंत किया है। 'विलासी' कहानी के सभी पात्र कहीं न कहीं लेखक से जुड़े हैं। 'शुभदा' में हारुन बाबू के रूप में अपने पिता मोतीलाल की छवि को उकेरा है। 'श्रीकांत' और 'विलासी' रचनाओं में सांपों को वश में करने की घटना शरत् का अपना अनुभव है। तपोवन की घटना ने शरत् को सौन्दर्य का उपासक बना दिया।
- देवानन्द गाँव में शरत्चन्द्र का संघर्ष और कल्पना से परिचय हुआ। बातें उनकी साधना की नींव थी। इसलिए शरत्चन्द्र कभी भी देवानन्द गाँव के ऋण से मुक्त नहीं हो पाए।

#### प्रश्न विचार (बोधात्मक विचार)

1. बालक शरत् को ऐसा क्यों लगा कि साहित्य का उद्देश्य मात्र दुःख पहुँचाना है? आपके विचार से साहित्य के कौन-कौन से उद्देश्य हो सकते हैं?
2. नाना के घर किन-किन बातों का निषेध था? शरत् को उन निषिद्ध कार्यों को करना क्यों प्रिय था?
3. बच्चों के प्रति शरत् के नाना की क्या मान्यता थी?
4. आपको शरत् और उसके पिता मोतीलाल में क्या समानताएँ नजर आती हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. “जो रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है, वह साधारण बालक नहीं है। बड़ा होकर वह निश्चय की मनस्तत्त्व के व्यापार में प्रसिद्ध होगा।” अघोर बाबू के मित्र की टिप्पणी पर अपनी टिप्पणी कीजिए।
6. ‘शरत् की रचनाओं में उनके जीवन की अनेक घटनाएँ एवं पात्र सजीव हो उठे हैं’— पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।
7. सिद्ध कीजिए कि शरत्चन्द्र एक सर्वदेनशील, प्रकृतिप्रेमी, परोपकारी एवं दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे?
8. ‘आवारा मसीहा’ उपन्यास में वर्णित तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति के विषय में बताइये।
9. शरत् के पिता मोतीलाल साहित्यकार होते हुए भी घर जँवाई बनने के लिए क्यों विवश हुए?
10. शरत् के शौक कौन-2 से थे? उन्हें उसे छिपकर पूरे क्यों करने पड़ते थे?

**विचारणीय प्रश्न:-**

1. “इस गाँव के ऋण से वह कभी मुक्त नहीं हो सका।” लेखक ने ऐसा क्यों कहा?
2. पाठ में वर्णित बाल सुलभ शरारतों का वर्णन कीजिए।
3. शरत् को नाना के घर पर क्यों रहना पड़ा?
4. वर्तमान समय में नारी की स्थिति व ‘आवारा मसीहा’ में वर्णित समाज में नारी की स्थिति—दोनों के अंतर को स्पष्ट कीजिए।